International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

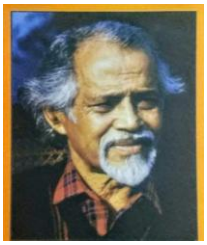

पद्मश्री रणवीर सिंह बिश्टः बहुआयामी व्यक्तित्व का पर्याय

डॉ0 संगीता गौतम
एसोसिएट प्रोफेसर
एस0 एस0 खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज,
इलाहाबाद

किसी कलाकार के लिए परम्परा से बंधना और टूटना, एक शैली बन जाती है। वह पुनः वापस आता है, फिर नई संभावनाओं को तला"ाने के लिए नई दि"ाा में चल पड़ता है। यह उसके रचना क्रम का एक हिस्सा है। ऐसी ऐतिहासिक विवेचना से हमें सूचनायें मिलती है, जो कलाकार के कलाक्रम के इतिहास का हिस्सा होती हैं। कलाकार की मनः स्थिति में समय के साथ–साथ आये बदलाव (जो परिस्थितियों से आये या दे"ाकाल की स्थिति से) ही उसे मजबूत करते हैं। वही उसके लिये रचनाक्रम में चित्र या मूर्ति रूप में अभिव्यक्त होते हैं। यही अभिव्यक्ति करने की विफलता ही कलाकार के विद्रोह ओर विखराव की प्रवृत्तियों का कारण बन कर उसके कलाकर्म में मिले–जुले स्वरूप में समय–समय पर कलाकृतियों के रूप में अभिव्यक्त होती है।

इससे जो धारा का प्रवाह बनता है, वही सारे तटबन्धनों का तोड़ता निरन्तर आगे बढ़ता है निरन्तर नई दि"ाओं की तला"ा म, इन्हीं दि"ाओं की तला"ा में आगे बढता रहने वाला व्यक्तित्व, जिसकी जिन्दगी का एक ही मकसद रहा, इस कलाजगत को नई ऊॅचाइयों की बुलंदी तक पहुंचाना और इस प्रदे"ा की कला को नई दि"ाा देना। जिसमें वह पूर्णरूपेण सफल रहा। इसीलिए उन्हें आधुनिक कला की नई धारा से जोड़ने का जनक भी कहा गया। वह महान व्यक्तित्व/कलाकार पद्मश्री से अलंकृत स्वर्गीय श्री रणवीर सिंह बिष्ट जी हैं।

प्रो0 रणबीर सिंह बिष्ट 4 अक्टूबर, 1928 को गढ़वाल मंडल में लेंसडाउन नामक स्थान पर मध्यम वर्गीय परिवार में पैदा हुए। यही पर 1948 में हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण कर कला एवं ि"ाल्प महाविद्यालय लखनऊ से 1950 में ड्राइंग टीचर्स ट्रेनिंग (अब आर्ट मास्टर्स ट्रेनिंग) किया। 1954 में 'डिप्लोमा इन फाइन आर्ट' वि"ोषीकरण पाठ्यक्रम (ललित कला) 1955 म किया। वर्ष 1955 में उ0 प्र0 सूचना विभाग में आर्टिस्ट पद पर कार्य किया। वर्ष 1956 में आर्ट मास्टर ट्रेनिंग में प्रवक्ता पद परसेवा प्रारम्भ की और इसी कला ि"ाल्प महाविद्यालय व ललित कला संकाय, लखनऊ वि"वविद्यालय में संकाय अधिष्ठाता व प्राधानाचार्य पद को सु"ाोभित करते हुए सेवानिवृत हुए। तीन वर्षों तक कार्यवाहक अध्यक्ष, राज्य ललित कला अकादमीउ0 प्र0 का कार्यभार निभाया।

हर कलाकार का एक लहजा और अंदाज होता है रणवीर सिंह बिष्ट ऐसे प्रख्यात चित्रकार इसके अपवाद नहीं है। यह कुछ विचित्र–सा मालूम पड़ेगा कि कलाकार की रचनात्मकता को इस विधि से समझा जाये और उसका अनु"ाीलन किया जाए। साथ ही यह भी बहुत ही साधारणी कृत प्रक्रिया होगी कि हम कलाकार के विभिन्न चरणों का मूल्यांकन करें– वह चरण जिनसे कलाकार गुजरा हो। मेरे जैसे के लिये स्वाभाविक होगा किवह उनसे विकास का स्मरण करें। लेकिन मैं यहाँ पर केवल उन प्रभावों का ही उल्लेख करूंगी, जिनके द्वारा यह जाना जा सके कि जब से वह कार्यरत थे, उन्होंने अपने लिए नि"िचत रास्ते को किस प्रकार खोज करने का प्रयत्न किया। लखनऊ जो वास चित्रों के लिए जाना जाता है और जो भूखण्ड चित्रों के लिए भी प्रसिद्ध है–वह भूखण्ड चित्र जिनमें एक वि"िाष्ट प्रकार का प्रभाव रेखांकित किया जाता है। लेकिन यह तथ्य जिसमें बिष्ट की रचनात्मकता को काफी हद तक गठित किया है, वह है लखनऊ कला महाविद्यालय में उनका प्रि"ाक्षण। इस महाविद्यालय की एक परम्परा और एक इतिहास रहा है। बंगाल स्कूल के वा"ा चित्रों ने यहाँ के चित्रकारों को प्रभावित किया। यद्यपि बिष्ट मोटे तौर पर वा"ा के प्रभावों से हटते गये है और यर्थाथ के रूप मे उन्होंने उसी सीमा तक कला कौ"ाल को ग्रहण करने का प्रयत्न किया है जिनके लिए उनके अध्यापक श्री ललित मोहन सेन व्यापक रूप से जाने जाते है– लेकिन रंगों का स्मरण या उनकी चमक और उनके पार लौकिक प्रभाव उन्होंने इसी महाविद्यालय से ग्रहण किये।

उन्होंने प्रारम्भ में स्वयं वा"ा शैली में काम किया, जो कहीं न कहीं उनकी मानसिक बनावट का हिस्सा बन गया।

हम कुछ साधारण साम्य या आपेक्ष ले सकते हैं, जैसे सिजा, जो मूलतः भूखण्ड और साथ ही साथ एक संरचनात्मक या संगठनात्मक कलाकार थे, जिन्होंने यर्थाथ को बहुत ही सरल माध्यम से अभिव्यक्त करकेये आयाम प्रस्तुत किये। यद्यपि बिष्ट लैंसडाउन के खूबसूरत वातावरण में पैदा हुए थे, जिनके चारों ओर हिमालय और विस्तृत आका"ा था और वे एक ऐसे रोचक भूखण्ड चित्रकार हो सकते थे जो संगठनात्मक सरलीकरण करता या अपने मन में दबे हुए बिम्बों को संगठित करता। यह दबे हुए विष्ट के फलक पर बार–बार आते हैंकभी आकस्मिक रूप से भी आ जाते हैं, लेकिन उनके विकास क्रम का स्वभाव कुछ और ही है। इसी प्रकार उन्हांने विकासों, या ब्रॉक के भी प्रतीकों को नही अपनाया, जिनके लिए यर्थाथ किसी भी प्रकारसे दृ"यगत तरीके से गठित किया जाता हो, जिनमें एक मौलिकता, सामाजिक या मानवी चिन्तन अव"य रहता है। लेकिन जब बिष्टसामाजिक या मानवीय अस्तित्व के प्रभाव या यर्थाथ से साक्षात्कार करते है, जबकि उनके मन पर काफी दबाव पड़ता है तो उस समय उनके द्वारा बनाये गये चित्र मनुष्य के निषेधों, प्रलोभवों या उसकी विकृतियों, उसके प्रति"ाोध या विद्रोहात्मक प्रवृत्तियों को ही अभिव्यक्त करते हैं।

यह शैलीगत स्तर पर एक विचित्र प्रकार की टकराहट थी। एक ओर पहाड़ो में उनका प्रारम्भिक जीवन बिताना और साथ ही नागरिक जीवन की जटिलताओं से उनका साक्षात्कार इन दो तथ्यों ने बिष्ट के व्यक्तित्व को एक विचार"ाील व्यक्ति और एक कलाकार का रूप प्रदान किया। यहॉ उनके विभिन्न चरणों पर द्रुतगति से दृष्टि डालना प्रांसगिक होगा।एक चित्रात्मक जलरंग के कलाकार जिनमें मौलिक रंगों का प्रभाव अधिक है– बिष्ट ने कई मैदानी तथा पहाड़ी दृ"यों के चित्र बनाये हैं। उन्होंने पुष्पित होने वाले पेड़ों के चित्र बनायें, बड़े–बड़े फलक पर रात्रि दृ"यो को बनाया, जिनमें रंगों के चौड़े आकार है, जिनमें कुछ स्पष्ट मकानों के दबे हुए दृ"य हैं या रात के वे फलक जो काले, लाल तथा पीले रंगों में बनाये गये हैं सब सम्मिलित हैं। इसके बाद 1964 में वे आन्तिरिक चित्रों की ओर आये और बाद में अभूर्त चित्रों की ओर उनका ध्यान गया, लेकिन इस सारी प्रक्रिया में वे मूलतः भूखण्ड चित्रकार ही रहे।

उन्होनें 1962 में शी"ा रहित मनुष्यों के चित्रों की एक श्रृंखला बनायी जिसमें बोलती हुई आंखों और निषेधात्मक दिमाग है। इसके बाद उन्होंने कुछ आकृति मूलक चित्र बनाये जो विषयगत थ और जिन्हें उन्होंने विद्रोह की श्रृखला से नांमांकित किया लेकिन इसके तत्काल बाद यानी 1963 के आस–पास उनके रंगों ने काफी जोर पकड़ा और रंगों के बिखेरने के माध्यम से उन्होंने आकार उभारने का प्रयत्न किया। उनके आकार कुछ रंगों के बोध को अभिव्यक्त करते ह जिसे वे बहुत हर कौ"ाल के साथ उपयोग करते हैं। इसके बाद उन्होंने रेखाचित्र आकारों में प्रयोग किये– ऐसे आकार जो समान्तर थे और जिनमें रंगों का कम से कम प्रयोग किया गया था। इसके तत्काल बाद उन्होंने महत्वपूर्ण प्रलोभन–श्रृंखला आरम्भ की, जिसमें रंग चटख हैं और एक स्त्री और एक कुत्ते के आकार समानान्तर रखे । बिष्ट द्वारा बनाये गये चित्रों की श्रृंखला में जो दूर दृष्टि से भूखण्ड मालूम पड़ेंगें– ऐसे सरलीकरण जो मूलतः उन्होंने गहरे या हल्के नीले रंगों में बनाये हैं– और कभी–कभी एक कलाकार क्षीण ब्र"ााघात, जो वातावरण मूलक स्फूर्ति के द्योतक लगते हैं और सारे चित्रफलक में हस्तक्षेप करते हुए हैं। इन चित्रों में गहराई है, तीव्रता है, एक विचित्र प्रकार का तनाव है, साथ ही एक विस्तार भी है। वे चित्र एक अर्थ में ब्रहमाण्ड मूलक लगते है।

कभी–कभी कलाकार कुछ वि"ोष प्रकार के चित्र बनाते–बनाते थक जाता है या यो कहिए कि उस काल वि"ोष की सारी रचनात्मक सम्भावनाओं को वह खर्च कर चुका होता है और बिल्कुल ही एक नयी दि"ाा अपनाता है। श्री बिष्ट ने भी ऐसे नगर चित्रों के बाद स्त्रियों के कई निरावरण चित्र बनाये हैं। उनमें से सभी चित्र प्रदर्"ात नही किये गये है और वे उनके व्यक्तित्व संग्रह के ही अंग है। सम्भव है दन चित्रों के बाद, जिनसे सम्भवतः द"र्ाक को विकारों की अभिव्यक्ति मालूम पड़े, हम श्री बिष्ट को एक अधिक शान्तिमय मुद्रा में पड़े,पाते हैं, जिसमें 'कैनवास' पर बनायी हल्के उड़ते हुए कुछ रोमानी, कुछ रहस्य वातावरण लिए हुए, अस्पष्ट पृष्ठभूमि में एक आध मनुष्य आकृतियाँ है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. xIssue x, Month 201x,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इन्हीं से सम्बद्ध कुछ अन्य चित्र है जिनमें हमें झोपड़ियों की एक छायामात्र दिखायी पड़तो है, चित्रकार का प्रयोजन झोपड़ी अंकित करना नहीं है, उनके मूल आकार की एक छाया प्रदान करना है। इन चित्रा में स्पष्टता तथा अस्पष्टता का भाव एक साथ प्रदर्”ित होता हुआ मालूम पड़ता है।

बिष्ट जी के व्यक्तित्व का ही प्रभाव था कि दे”ा के विभिन्न कला संस्थानों, दे”ाी–विदे”ाी संस्थानों की पराम”र्दाता समितियों, अनेक संस्थानों के अध्यक्ष, मंत्रालयों में सलाहकार जैसे सम्मानित 58 स्थानों की जिम्मेदारी उन्होंने समय–समय पर निभायी। साथ ही उनके काम की दे”ा–विदे”ा में लगभग 45 एकल और 25 से ज्यादा समूह प्रद”र्ानियां हुई– जिसमें– श्री धराणी गैलरी 1981, आलइंडिया फाइन आर्टस् एण्ड क्राफ्ट्स सोसाइटी में 1972 एवं 1978 तथा 1995 में, धूमिमल, गैलरी 1987, रवीन्द्र भवन 1988, धूमिमल सेंटर–1995, भव्यने”वरी आश्रम आर्ट गैलरी 1995 (सभी दिल्ली) आठ प्रद”र्ानियां लखनऊ में, जिनमें मूर्ति ग्राफिक, पॉटरी और ड्राइंग की प्रद”र्ानी सम्मिलित है, सृष्टि आर्ट गैलरी में 1995, मसूरी में एक, ि”ामला, झॉसी, कानपर, पुरी तथा इलाहाबाद में एक–एक लैंसडाउन में दो, बाम्बे में चार– जहाँगीर–1983, 1985, ताज–1980 गैलरी ओसिर–1970 चंडोगढ़ व न्यूर्याक में, एक–एक एकल प्रद”र्ानी आयोजित कर रणवीर सिंह बिष्ट ने दे”ा विदे”ा में न कि व्यक्तिगत रूप से ख्याति अर्जित की अपितु उत्तर प्रदे”ा व भारत वर्ष को गौरवान्वित किया।इसके अतिरिक्त सैकड़ों – अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय प्रद”र्ानियों में भागीदारी निभाकर भावी पीढ़ी को प्रोत्साहित किया। सन् 1967–1968 तक यूनाइटेड ने”न्स एजूके”नल साइंटिफिक एण्ड कल्चर आर्गेनाइजे”न (यूनेस्को) द्वारा फेलो”िप पर फ्रांस में भारत का प्रतिनिधित्व किया। 1965 में राष्ट्रीय पुरस्कार में ललित कला अकादमी, नई दिल्ली द्वारा सम्मानित किए गए। 1968 में मुख्यमंत्री 'स्वर्ण पदक' से सम्मानित किए गए। 1984 में उत्तर प्रदे”ा ललित कला अकादमी के फेलो”िप प्राप्त हुई। 1988 राष्ट्रीय ललित कला अकादमी की फेलो”िप मिली। 1991 में भारत सरकार ने 'पद्म श्री' द्वारा सम्मानित किया। 1991 में 'कलारत्न–आल इण्डिया फाइन आर्ट एण्ड क्राफ्ट सोसाइटी से प्राप्त किया। 1997 में उ0 प्र0 रत्न अलंकरण से तथा 1998 (स्वर्ण जयंती पखवाड़े में) उ0 प्र0 ललित कला अकादमी द्वारा 'कला सेवा सम्मान से सु”ाभित हुए प्रो0 बिष्ट अनेक संस्थानों की सदस्यता निभाते रहे, जैसे– बोर्ड आफ स्टडीज – का”ाी हिन्दू वि”वविद्यालय–1989, गवर्निंग बॉडी– उ0 म0 क्षे0 सां0 के0 इलाहाबाद तथा राजस्थान, वाराणसी, अलीगढ़, शान्तिनिकेतन, गोरखपुर, गढ़वाल, मेरठ, आगरा, का”ाी विद्यापीठ, इलाहाबाद आदि विद्वविद्यालयों में 'एक्सपर्ट मेंम्बर' एवं स्वीडेन, अजमेर, इंदौर एवं दे”ा के अन्य अनेक संस्थानों व विभागों से संबद्ध रहकर जनसेवा में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया।

बिष्ट जी ने केवल कला जगत तक ही अपने को सम्बद्ध नहीं रखा बल्कि लखनऊ के सथानीय बाजार हजरतगंज स्थित 'इंडियन कॉफी हाऊस' में बैठना उनकी दिनचर्या में शामिल था, जिससे समाज के विभिन्न वर्गों से सम्बन्ध होना सम्भव हो सका, जैसे राजनीतिज्ञ, अधिवक्ता, चिकित्सक, प्रबुद्ध चिंतक, कवि, लेखक, पत्रकार, संगीतकार आदि। यही कारण था कि व्यक्तित्व का बहुआयामी विकास संभव हो सका और संपूर्ण समाज को गहराई तक समझने का सुअवसर प्राप्त हुआ। अंतिम दिनों की श्रृंखलाओं का प्रेरणास्रोत यहीं से प्राप्त होता रहा। वैसे पहाड़ों में शै”ाव व्यतीत होने के कारण समाज के मध्यम और निचले तबके के लोगों के दुखः–दर्द जानना–सुनना ओर उस पर मरहम लागाना बिष्ट के आदत में शामिल था। यही कारण है कि जीवन के विभिन्न स्वरों को कैनवस पर उतारने में आसानी हो सकी। थीम के अतिरिक्त स्वच्छन्द विषयों में लालच, विद्रोह, युवा–आक्रो”ा, भ्रष्टाचार, सफेदपो”ा– अपराधी, गरीबी इत्यादी प्रमुख है। वर्णो का प्रयोग भावानुकूल– कहीं तीव्र तो कहीं अत्यधिक चटख और पैनापन लिए है। ऐसा प्रभाव मुख्यतः मुखाकृतियों में दिखता है। पर व्यक्तित्व के अनुरूप सदैव आ”ाावादी भाव व रंग प्रयुक्त होते रहें। अपनी प्रयोग धर्मिता के विषय में बिष्ट ने कहा था– मैं निरन्तर प्रयोगा में सक्रिय रहा ह, विभिन्न शैलियों, माध्यमों व विषयों के मध्य अपनी कला धारा को प्रोत्साहन करते रहने में वातावरण वि”ोष, समय वि”ोष और परिस्थिति तथा अन्य प्रक्रिया को चित्रित करने का क्रम बनाये रखा। मैने अपने को कला और मिट्टी से जोड़े रहने के साथ–साथ नये कला आन्दोंलनों तथा राजनीतिक आन्दोंलनों से भी सम्बन्ध रखा। यह एक

लम्बी कला यात्रा थी जिसमें अनेक पड़ाव आये। मै जिस विद्यालय में विद्या अर्जन करने आया था, वहीं कला गुरू और फिर प्राधनाचार्य एवं संकाय अधिष्ठाता पद पर कार्य किया। मेरी कला साधना ने मरा पद कभी बाधक नहीं रहा बल्कि मुझे अनेक अनुभव प्राप्त हुए तथा विविध झंझावतों के मध्य भी कला साधना में लीन रहने की शक्ति प्राप्त हुई। मैं अपनी गरिमामयी प्राचीनतम संस्कृति एवं परम्परा के प्रति भी सचेत रहा पर नवीनतम को कभी अनदेखा नहीं किया। यही कारण था कि मैं झील के पानी की तरह कभी स्थिर नहीं हुआ बल्कि गंगा के वेग–पूर्ण प्रवाह की तरह बढ़ता रहा। प्रकृति मेरा सबसे बड़ा गुरू है।

कला और कलाकार के विषय में प्रो0 बिष्ट के विचार बिल्कुल साफ थे। वे आत्मचिन्तन को महत्व देते थे। बाहरी और अनाव"यक प्रभावों से बचना चाहते थे। एक कला f"kविर की प्रद"kर्नी के उद्घाटन के अवसर पर कहा था– 'कलाकार वह है जो बाहरी शोर–"kराबे से दूर अपने अंदर कुछ खोजने में संलग्न है।साथ ही जिसका हर प्रयास कुछ नया कर दिखाने को होता है।कला ही एक ऐसा माध्यम है जो मानवीय संवेदनाओं को जाग्रत कर संवेदनहीनता से मुक्ति दिला सकता है'।

बीसवीं सदी का अंतिम चतुर्थक प्रो0 बिष्ट के लिए आत्यधिक गौरवमयी इतिहास रचने वाला था। इस समय सामाजिक और राजनैतिक जीवन तथा इसके प्रभाव से दुर्द"kाग्रस्त समाज बिष्ट को झकझोर रहा था, कुछ करने या समाज को जाग्रत करने के लिए। एक कलाकार के रूप में अपना दायित्व निभाने के लिए जो प्रत्येक कलाकार पर समाज का ऋण रहता है। इसी विचार से बिष्ट ने यहाँ अपना चित्रण विषय व तकनीक परिवर्तित कर मिश्रित आकृति मूलक संयोजन प्रारम्भ किया। ये अधिकां"k रंग में सचे गये ।रंग काले, भूरे, लाल इंडियन यलो आदि प्रमुखता से लगाए गए। सरकार का ध्यान भी इधर आकर्षित करना था। और चित्रों की श्रंखला तैयार होने लगी–ब्लैक पैसेज आफ द इण्डियन रिपब्लिक– जिसका उद्घाटन दिल्ली में पूर्व प्रधानमंत्री श्री चन्द्र"kखर ने किया। इस सीरीज में बिष्ट ने समाजिक व्यवस्था से असतोष और रचनात्मकता के प्रति विचारों में उथल–पुथल द"kाया है।

आर्ट कॉलेज से सेवा मुक्त होते ही प्रो0 बिष्ट एक प्र"kासक के बजाय सिर्फ रचनाकार रह गए, जिससे यह द"kक काफी महत्वपूर्ण साबित हुआ। जहाँ 'ब्लैक पैसेज ऑफ द इंडिया रिपब्लिक' में समाज में बढ़ते अपराध और मौन प्र"kासन पर कटाक्ष किया गया है, सफेद पो"k अपराधियों और अपराधों के प्रति ध्यान आकृष्ट किया गया है, वहींजीवन के अंतिम द"kक में अनवान्टेड सीरीज में समाज की उस गन्दगी को उजागर किया जो विकृत मानसिकता की व्यक्तियों के कुकर्मों का परिणाम होते है जो सुख–समृद्धि पूर्ण तथा समाज के ऊँचे तबके में जीवन यापन कर रहे होते है और कुकृत्यों के परिणाम से उत्पन्न उस अनचाहे को समाज में जिल्लत की जिन्दगी जीने पर विव"k होना पड़ता है, अगस्त – 1998 में 'स्वाधीनता की जयन्ती' पर आयोजित कला f"kविर में उन्होंने अपने जीवन के इस अंतिम चित्र को बनाया था, जिसमें महिला एक गठरी लिए जा रही है, जिसका पीछे का हिस्सा दिख रहा है। संकेत है कि आगे का हिस्सा छिपा रही है और समाज द्वारा दिये गए इस पाप की गठरी को धो रही है।

बिष्ट एक सम्पूर्ण कलाकार थे, जो सभी माध्यमों में उतनी हो इक्षता से कार्य करते थे। उन्होंने चित्रण के साथ ही मूर्तिकला में भी कार्य किए थे। उन्होंने अनेक मूर्तियाँ प्लास्टर, सीमेंट और मार्बल में सृजित और प्रद"kित की। इसके 'माँ–बेटा', 'वात्सल्य और अन्य कई संयोजन तथा सिरामिक में बने चेहरे को या पॉट को मैट ग्लेज में अनक तरह से रचा। कई प्रद"kनियों में बिष्ट ने मूर्तियों के जरिये ही भागीदारी निभायी। प्रयोगधर्मिता उनकी प्रवृत्ति थी, इसीलिए वे कभी शैली और माध्यम में अपने को बॉधने के बजाए नित नए प्रयोग करते थे, परिवर्तन में जीना चाहते थे। सबको यही सिखाते थे। एक अच्छे रचनाकार के साथ बिष्ट जिम्मेदार संरक्षक भी थे। वे समय–समय पर विषम परिस्थितियों में युवा कलाकारों को उचित मार्गद"kन दिया करते थे। हिम्मत दिलाते हुए एक दिन बोले – 'उस वृक्षका महत्व नहीं है, जिसे माली रोज आकर सींचता है, खाद डालता है, गुड़ाई करता है, ऑधी/हवा के झोंको से बचाने के लिए सहारा देता है, तबवह कहीं स्वयं खड़ा होने लायक बन पाता है, बल्कि महत्व उस वृक्ष का है जो कंकरीली–पथरीली, ऊसर जमीन में उगता है,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. xIssue x, Month 201x,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सर्दी–गर्मी ऑधी–पानी के थपेड़े खाकर पलता–बढ़ता है और किसी के छाया देने लायक बन जाता है। इसलिए, परिस्थितियॉ अपने अनुकूल बनाओं।

25 सितम्बर, 1998 में बिष्ट जी का देहावासान हो गया। व्यक्ति चला जाता है, व्यक्तित्व बच जाता है। आकृति नष्ट हो जाती है कृतियॉ शेष रह जाती है। कृतियॉ और व्यक्तित्व ऐसे संपर्क है जिन्हें काल की उद्दाभ धारा भो धो नहीं पाती। आज हमारे पा"र्व में बिष्ट जी का वह शरीर उपस्थित है जो अमर है। इसे हम बिष्ट का य"ाःकाय भी कह सकते हैं। उनका य"ाःकाय इतना विराट, विविधापूर्ण, चटक और आकर्षक है कि हमें उनके शरीर के नष्ट होने की स्मृति किसी अपवाद से नहीं भरपाती। इतना ही नहीं इस रूप में वे निरंतर हमें और हमारी आने वाली संवेदन"ाील पीढ़ी को भी यह मंत्र देती रहेगी कि ठहराव चाहे किसी वाद पर, विचार पर या लक्षण पर हो सड़ जाता है और स्वतंत्रता ही सृजन का मूलाधार बनी रहती है।

संदर्भ सूची

1. कला त्रैमासिक – राज्य ललित कला अकादमी, उ0 प्र0 रणवीर सिंह बिष्ट वि"ोषांक, अंक – 22 1985
2. अमर उजाला – बरेली, 2 जनवरी, 1996
3. कला चिंतन कला त्रैमासिक से श्रेष्ठ रचनाओं का संकलन
4. असद अली, रणवीर सिंह बिष्ट, मोनोग्राफ, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली
5. लखनऊ के चित्रकार और मूर्तिकार, डॉ.शेफाली भटनागर
6. भारत की समकालीन कला – एक परिप्रेक्ष्य – प्राण नाथ मागो

रणवीर सिंह विष्ट के प्रसिद्ध चित्रों का संग्रह

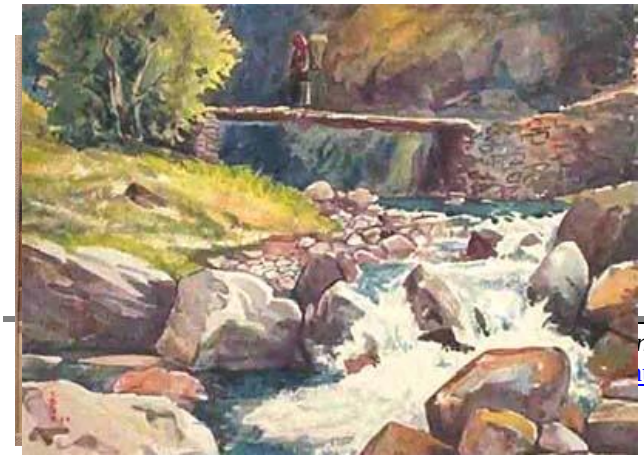

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. xIssue x, Month 201x,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

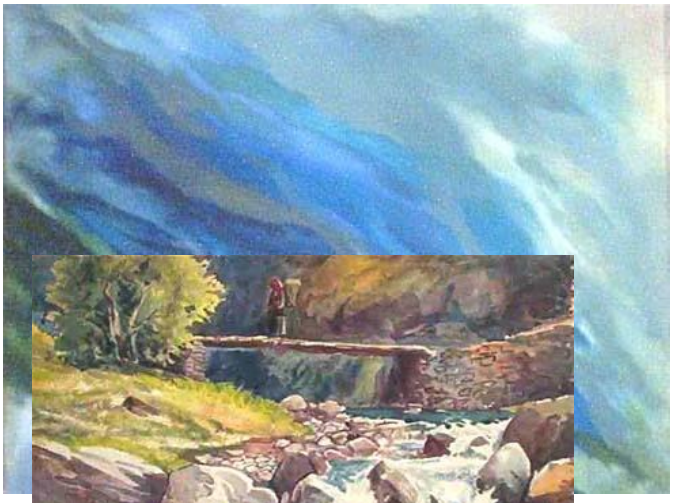

'द ब्लू सीरिज' कुछ चित्र

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. xIssue x, Month 201x,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A